''बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का एक अध्ययन''

भागीरथ सैनी* & डॉ.भाबग्राही प्रधान**

*पीएच.डी (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।

**सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूँ ,राजस्थान।

Received: September 22, 2018 Accepted: November 02, 2018

ABSTRACT:

Key Words:

➢ उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य बीपीएल(Below Poverty Level)वर्ग के परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक, आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का अध्ययन करना है। आज बीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना भी कठिन हो गया हैं। निर्धनता के कारण विद्यार्थी का शारीरिक विकास तो प्रभावित होता है ही साथ में उसे मानसिक संत्रास भी सहन करना पड़ता है। आर्थिक स्तर कमजोर होने के कारण उसकी शिक्षा प्रभावित होती है। ऐसे बालकों का मानसिक स्तर कमजोर हो जाता है, चिंतन,तर्क,कल्पनाशक्ति, समायोजन,सृजनशीलता एवं आत्म–सम्प्रत्यय प्रभावित होते है।इसलिये शोद्यार्थी ने इन समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक संक्षिप्त प्रयास किया है।

➢ प्रस्तावनाः–

निर्धनता के बारे में वेदों में कहा गया है कि है!'दरिद्रता तुम मेरे द्वार के पास से होकर भी मत जाना'। मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार वित्त होता है। हमारे देश में वर्षों के आर्थिक विकास के पश्चात् भी प्रति व्यक्ति आय अभी बहुत कम है। भारत कीअधिकांश जनसंख्या निर्धनता रेखा (बीपीएल) के आस–पास स्थिर है, ऐसी स्थिति में निर्धन वर्ग के लिए शिक्षा के साथ–साथ रोटी, कपड़ा, एवं मकान को प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण हो जाता हैं। गरीबी रेखा या निर्धनता रेखा (Poverty Line) आय के उस स्तर को कहते हैं, जिससे कम आमदनी होने पर व्यक्ति अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है। गरीबी रेखा या निर्धनता रेखा अलग–अलग देशों में अलग–अलग होती हैं। उदाहरण के लिए अमरीका में निर्धनता रेखा भारत में मान्य रेखा से काफी ऊपर है। हमारा देश भारत गणतंत्र, पंथ निरपेक्ष, विकासशील लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जो अन्तर्राष्ट्रीय जगत में स्वयं को विकसित राष्ट्र के रुप में स्थापित करने के लिये प्रयासरत है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का अर्थएक ऐसी प्रणाली से लगा सकते है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान हो।

अतः यदि प्रजातंत्र को वास्तविक स्वरुप देना है तो हमें एक एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देना होगा, जिसके द्वारा इस देश के प्रत्येक निर्धनता रेखा (बीपीएल) वर्ग के बालक को विकास के समान अवसर प्राप्त हो।स्वतंत्रता के पश्चात्निर्धनता रेखा (बीपीएल) वर्ग के छात्रों की शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं के लिए तथा उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए सरकार अनेक योजनाएँ चला रही हैं। एक राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों पर निर्भर है, जैसा कि सर्वविदित है कि आज का बालक देश का भावी नागरिक है। जिसे समाज ही पूर्ण रूप से तैयार करता है। इसलिए आवश्यक है कि हमारे भावी नागरिक योग्य, कुशल एवं आदर्श व्यक्तित्व लिए हो। बीपीएलवर्ग के बालकों के यह सभी व्यावहारिक पक्ष तभी विकसित हो सकते है, जब वह जीवन की विभिन्न शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं को विभिन्न प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करने के लिए प्रस्तुत कर सके। बीपीएलपरिवारों के विद्यार्थियों कीशैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का अध्ययन निम्नलिखित बिन्दुओं के अर्न्तगत किया गया हैं :–

➢ बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिकसमस्याएँः–

प्राचीन भारत तथा आधुनिक भारत पर यदि सूक्ष्मता से दृष्टिपात किया जाए तो हम पायेगें की ''सर्व जन समभाव'' की भावना धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है।तथा बीपीएलवर्गके विद्यार्थी समाज के अन्य व्यक्तियोंसे विकास के मामले में पिछड़ते जा रहे हैं। बीपीएल वर्ग शिक्षा के अवसरों का लाभ उठाने में असमर्थ रहता हैं। इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक जटिलता इतनी अधिक होती जा रही है कि चारों ओर असंतोष की आँधी आयी हुई है। समाज की इस कमजोर कड़ी को पथभ्रष्ट मानव समाज एवंशैक्षिकऔर सामाजिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है। परिणाम स्वरूप ये लोग राष्ट्रीय धारा में पूरी तरह से मिल नहीं पाये है, और समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं।

इसलिए गाँधीजी ने कहा है कि ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में अन्तर्निहित सर्वांगीण विकास को प्रकट कर सर्वोतम का विकास करना है।''

शिक्षा प्राप्त करने हेतु सामान्य विद्यालयों में जो विद्यार्थी आते है, उन्हीं के अनुरूप बीपीएलवर्ग के विद्यार्थियों को भी शिक्षा व्यवस्था में शामिल करना चाहिए। जिससे वे अपनी शिक्षा, सृजनशीलता व आत्म–सम्प्रत्यय का उचित विकास कर सके तथा जिसके कारण समाज, विद्यालय व राष्ट्र के जीवन में अभूतपूर्व वांछनीय परिवर्तन ला सके।भारत में बीपीएल वर्ग एवं अन्य विद्यार्थियों से सम्बन्धित शैक्षिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं :–

1. विद्यालयों में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की कमी एवं दोषपूर्ण पाठ्यक्रम।
2. विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में शिक्षण–सहायक सामग्री की कमी।
3. विद्यालयों के शिक्षकों का राजनीति में भाग लेना एवं संकुचित मानसिकता।
4. विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में पुस्तकों एवं पुस्तकालय की कमी।
5. विद्यालयों में बालकों द्वारा शिक्षण बीच में छोड़ देना (Drop Out)।

6. विद्यालयों की भौगोलिक स्थिति एवं दूरी। (पर्वतीय,रेगीस्तानी,दलदली,अरण्य आदि)
7. विद्यालयों में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की कमी, जिसके कारण विद्यालयों में साफ–सफाई के अलावा अन्य छोटे–मोटे कार्य स्टॉफ द्वारा बालकों से करवाऐं जाते है।
8. बीपीएल वर्ग केविद्यार्थियोंके माता–पिता का अशिक्षित होना, जिसके कारण वे बालकों को पढ़ाने में रुचि नहीं लेते है।
9. विद्यालयों में पर्याप्त मात्रा में श्रव्य–दृश्य साधनों की कमी।
10. बीपीएल वर्ग के बालकों के माता–पिता का रुढ़ीवादी दृष्टिकोण एवं अन्धविश्वासी होना।

वर्तमान सामाजिक जटिलताओं का प्रभाव बीपीएलवर्ग के बालकों पर भी पड़ रहा है। सामान्यतः लोगों में यह अवधारणा पायी जाती है कि बीपीएलवर्गके बालकों का मानसिक स्तर अत्यन्त कमजोर होता है और वे समाज के विकास में अपना उचित योगदान नहीं दे पायेंगे। इसके साथ ही बीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों में हीन भावना सबसे बड़ी कमजोरी है। इसका प्रमुख कारण शैक्षिक,समस्याओं के कारण पिछड़कर ये बालक अन्य वर्गों के बालकों से विकास के मामले में पीछे रह जाते है। उनके सामने दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह कि बीपीएलवर्ग के विद्यार्थियों के परिवारों में मूलभूत आवश्यकताओं की कमी पूरी नहीं हो पाती है। जिस कारण उनमें शिक्षा, अध्ययन, सृजनात्मकता, सूझ एवं स्व–प्रेरणा (आत्म–सम्प्रत्यय) का उचित विकास नहीं हो पाता क्योंकि इन शक्तियों के अभाव में बालक अपनी उचित शिक्षण क्षमता का पूर्ण रुप से उपयोग नहीं कर पाते है।

बीपीएलवर्ग के विद्यार्थी अपनीशैक्षिक समस्याओं के कारण समाज के अन्य व्यक्तियों या वर्गो से स्वयं को पिछड़ा हुआ पाते है। तथा वे अपने परम्परागत व्यवसाय कृषि, वन कार्य व खनन कार्यो को न चाहते हुये भी करने लगते है। इसके पीछे एक प्रमुख कारण है, उसका अशिक्षित होना।

➢ बीपीएल परिवार के विद्यार्थियों की आर्थिकसमस्याएँ :–

आर्थिक समस्याः–

आर्थिक समस्या का अर्थ है कि किसी भी अर्थव्यवस्था के सीमित संसाधन मानव की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते। इसका मानना है कि मानव की आवश्यकताएँ असीम हैं, जबकि उनको पूरा करने के साधन कम होते हैं। आर्थिक समस्या को ही 'मूलभूत आर्थिक समस्या' कहते है।

इसके कारण तीन प्रश्न उठते हैं :–

(1) क्या उत्पन्न किया जाए?
(2) कैसे उत्पन्न किया जाए?
(3) किसके लिए उत्पन्न किया जाए?

आर्थिक समस्या का अर्थ :–

बीपीएल परिवार के विद्यार्थियों को पारिवारीक या आर्थिक रुप से प्रभावित करने वाली समस्या को आर्थिक समस्या कहते है। आर्थिक समस्या का कथन है कि किसी भी अर्थव्यवस्था के सीमित संसाधन, श्रेष्ठ बच्चें किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि होते हैं। इस निधि को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करना एवं इनके सामाजिक, आर्थिक, एवं नैतिक मूल्यों के विकास का दायित्व केवल उन परिवारों का ही नहीं, जहां ये बच्चें जन्म लेते हैं वरन् समाज तथा देश का भी है जहाँ ये बड़े होते हैं तथारहते हैं।

वर्तमान समय में बीपीएल छात्रों का गाँव से शहरों की तरफ हो रहे पलायन के कारण एक नए तरह के बाल मजदूरों का वर्ग तैयार हो रहा हैं। इसमें हमारी बदलती जीवन शैली का दुष्प्रभाव भी शामिल है। यह देखने में तो रोजगार के विकल्प के रुप में निर्धनों से जुड़ गया है। लेकिन सच्चे अर्थो में बच्चों की बदतर स्थिति के लिए जिम्मेदार कारक है। उदाहरण के लिए बड़ी संख्या में शहरों में बच्चे प्लास्टिक की थैलियाँ बीनने के लिए गंदगी के ढेर में उतरकर जाने अनजाने में कई तरह कीबीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं। वे इस गन्दगी की बदबू में काम कर सकें और अपनी भूख को विस्मृत कर सके इसके लिए ही सॉल्यूशन, व्हाईटनर का नशा अपना लेते हैं।

शहरी बीपीएल छात्रों को परिवार में आर्थिक तंगी और अनिश्चित रोजगार का नुकसान भुगतान पड़ रहा है। यही वजह है कि बालिकाएं स्कूल छोड़कर बंगलों पर झाड़ू पोंछा करने जाने लगी हैं। यहाँसमाचार–पत्र बेचने से लेकर समस्त दुकानों पर काम करते बच्चें और ईश्वर के नाम पर भीख मांगते बच्चें मिल जाते हैं। इसी क्रम में मोटर गैरेज में काम करके कौशल सीखते बच्चे भी हैं, जिनका आर्थिक शोषण और काम करना उचित मान लिया गया है। बालश्रम कानूनका हालिया संशोधन जब पारिवारीक धंधो में पढ़ाई के साथ बच्चों को काम करने को मान्यता प्रदान करता है।बाल श्रमिकों की एक बड़ी संख्या रेल्वे स्टेशनों पर ट्रेनों में गुटखा बेचते झाड़ू लगाकर भीख मांगते दिखाई देती है।जब आप बाल मजदूरों की समस्या पर बात करते हैं तो कुछ लोग यह कहते मिल जायेंगे कि आदत ही ऐसी हो गयी है कि इनका कुछ नहीं हो सकता। अथवा ये कि कम से कम बच्चे कुछ काम तो सीख रहे है, बड़े होकर बेरोजगार तो नहीं रहेंगे।कुछ लोग कहते है कि कमायेंगे नहीं तो खायेंगे क्या? से लेकर बच्चों को कमाई के सहायक के रुप में देखते हैं। कई यह आरोप भी लगाते हैं कि सरकार ने इनके लिए इतना कुछ किया है जैसे–निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की फिर भी यह सुधरना नहीं चाहते। दुकानदार यह दलील देते मिल जायेंगे कि मैंने तो इसे कितनी बार पढ़ने के लिए बोला है फिर भी ये पढ़ना नहीं चाहता इसलिए बेकार में इधर–उधर घुमने से अच्छा है कि कुछ काम करना ही सीख लें।अतः बीपीएल परिवारों से जुडें बालकों को आर्थिक, सामाजिक सुरक्षा कवच में लायें बिना यह लक्ष्य प्राप्त करना मुश्किल होगा।

➢ बीपीएल परिवार के विद्यार्थियों की मानसिक समस्याएँ :–

मानसिक समस्या का अर्थ :–

बीपीएल परिवार के विद्यार्थियों के मन या मस्तिष्क को प्रभावित करने वाली समस्या को मानसिक समस्या कहते है। आज तेजी से बदलते वातावरण में हमारे शरीर और मन पर जो असर पड़ता है, उसे तनाव कहते है। तनाव दो तरह का होता है :–1अच्छा तनाव 2 बुरा तनाव। जहाँ अच्छे तनाव की वजह से बीपीएल विद्यार्थी हर काम में प्रमोशन पाते है, वहीं बुरे तनाव के कारण इनमें निराशा, कुंठा उत्पन्न होती है।

निर्धनता, परिवार, पैसा, काम और विद्यालय आदि मानसिक समस्या के सामान्य कारण है। ज्यादा तनाव बीपीएल विद्यार्थी की सेहत के लिये नुकसानदायक होता है इसकी वजह से छात्र और मित्रों के मध्य संबंध भी बिगड़ जाते है। कई बार जब विद्यार्थी तनाव भरी परिस्थितियों से गुजरते है, तो उनका क्रोध पर नियत्रंण नहीं रहता है।

मानसिक समस्या के लक्षण :–

नीचे दिए लक्षण तथा खराब स्वास्थ्य बीपीएल छात्रों के तनाव को बढ़ा सकता है :–

- सिरदर्द व पीठदर्द।
- नींद न आना क्रोध और हताशा।
- अपना ध्यान केन्द्रित न कर पाना।
- रोते रहना।
- दुसरों को नजरअंदाज करना।
- पेट खराब होना या अल्सर होना।
- रैशेज़, लाल चकते होना।
- उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, हृदयघात।

बीपीएल छात्रों में प्रमुख मानसिक समस्याएँ :–

मानसिक समस्याएँ बहुत प्रकार की हो सकती हैं। ये विकार व्यक्तित्व, मनोदशा, खाने की आदतों, चिन्ता आदि से सम्बन्धित हो सकते हैं। इस प्रकार मानसिक रोगों की सूची बहुत बड़ी हैं। बीपीएल छात्रों में प्रमुख रुप से निम्नलिखित मानसिक समस्याएँ पाई जाती हैंः–

- दुर्भीति (फोबिया),
- मनोदशा विकार (मूड डिस्आर्डर)
- ज्ञानात्मक विकार (काग्निटिव डिस्आर्डर)
- व्यक्तित्व विकार
- खंडित मानसिकता (शाइज़ोफ्रेनिया)
- द्रव्य सम्बन्धि विकार (सबसटैंस रिलेटेड डिस्आर्डर) जैसे :– शराब पर निर्भरता।
- अवसाद (डिप्रेस्न)
- एकध्रुवीय अवसाद या मुख्य अवसादी विकार
- द्वीध्रुवीय विकार
- चिंता
- चित्तविभ्रम
- बहुव्यक्तित्व विकार
- मनोविक्षिप्ति
- मानसिक मन्दन
- संविभ्रम
- अंतराबंध या स्किजोफ्रीनिया
- उत्पीड़न भ्रांति
- असमायोजन
- अंसवेदनशीलता
- अरुचि
- क्रोध
- भग्नाशा
- निराशा आदि।

आज बीपीएल वर्ग के बालकों को अनेक मानसिक बीमारियाँपरेशानी में डालती है। इनमें से कुछ बीमारी एवं तनाव को योग, प्राणायाम एवं आयुर्विज्ञान से ठीक की जा सकती है। बीपीएल छात्रों में मानसिक समस्या को ठीक करने के निम्नलिखित उपाय हैं।

मानसिक समस्या को कम करने के उपाय :–

- सूर्योदय से पहले उठें, घूमने जाएं, हल्का व्यायाम अथवा योग करें। अगर आप रोज कम से कम 30 मिनट भी योग करें तो आप काफी सीमा तक तनाव पर नियन्त्रण पा सकते है। इससे आप शारीरिक तौर से फिट रहेंगे ही साथ ही आपको मानसिक शांति मिलेगी।
- प्रातःकाल व सोते समय पन्द्रह मिनट ईश्वर का ध्यान करें।
- छात्रों को अपने अन्दर छुपी हुई रुचि को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। हमेशा सकारात्मक चिंतन करें क्योंकि नकारात्मक सोच से ऊर्जा नष्ट होती है।
- उत्साह एवं आत्मविश्वास के साथ काम करें, व्यवस्थित दिनचर्या की आदत डालें।
- तनाव पर काबू पाने के लिये किताबें पढ़ना भी एक अच्छा उपाय है। आप अपनी मनपंसद किताबें पढें जिससे काफी हद तक आपका तनाव कम होगा।
- कभी भी किसी विषय पर अत्यधिक गंभीर न हों।
- छात्रों को नींद न आना या फिर कम सोना भी तनाव का महत्वपूर्ण कारण है, इसलिये भरपूर नींद लें, नींद न आती हो तो सोने से पूर्व अच्छी पुस्तक का अध्ययन करें।
- छात्रों को नियमित सैर व व्यायाम की आदत डालनी चाहिए।
- आदतों मे बदलाव लाने का प्रयास करें, गलत आदतों का त्याग करे। गलत आदतों के कारण हमें मानसिक तनाव रहता है।
- स्वयं को काम में व्यस्त रखें। व्यर्थ बातों को सोचकर तनावग्रस्त न रहें।
- प्रातःकाल जल्दी उठकर ताजी हवा में श्वासँ लें।
- तनाव कम करने के लिए भरपूर नींद लेना बहुत जरूरी है, रोजाना कम से कम 7 घंटे की नींद जरूर पूरी करें।
- छात्रों को हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए। तनाव से बचने के लिए हास–परिहास को जिन्दगी में शामिल कर हम क्रोध, चिंता,खिन्नता, निराशा और चिड़चिड़ेपन से मुक्त हो सकते है।
- छात्रों को हमेशा सामाजिक कार्यों में भाग लेना चाहिए। तथा लोगों, मित्रों एवं परिवार के सदस्यों के साथ खुलकर मिलना चाहिए।

- छात्रों को ज्यादा से ज्यादा संगीत सुनना चाहिए उससे मानसिक तनाव कम होगा। प्रतिदिन बीस से तीस मिनट कोई अच्छा संगीत सुनें।

सारांश:–

अतः इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो शिक्षा एवं सरकारी योजनाओं द्वाराबीपीएल वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक,आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का समाधान कर सक्ते हैं। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है, जो समाज के इस वर्ग के भावी नागरिकों को अपना उचित विकास तथा स्वयं को जानने में सहायक की भूमिका निभा सकती हैं।

इसके अलावा सरकार समय–समय पर बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक, आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं के समाधान हेतु अनेक सरकारी योजनाएँ चलाती रहती हैं। जिससे बीपीएल परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक, आर्थिक एवं मानसिक समस्याओं का समाधान हो सके एवं बीपीएल विद्यार्थियों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकें।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

➢ **पुस्तकें :–**

1. उपाध्याय, भार्गव,त्यागी, (2015),''अधिगम का मनो–सामाजिक आधार एवं शिक्षण''अरिंहत शिक्षा प्रकाशन, 50 प्रताप नगर, टोंक फाटक, जयपुर, पेज न.267
2. झा, मदनमोहन (2003), ''समावेशी–शिक्षाः दृष्टिकोण व प्रक्रियाए'',नई दिल्ली।
3. मितल आर.ए, शर्मा बी.एल, सक्सेना बी.एम., (2011),''शिक्षा के मनो–वैज्ञानिक आधार'' आर.लाल बुक डीपो मेरठ, UP, पेज न.44
4. शर्मा,एस.एन; शर्मा अंजना, (2014),''आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान के आधार'' एस.पी.भार्गव बुक हाउस,कचहरी घाट आगरा, 282004, पेज न. 290-91
5. शर्मा,दिनेश(2015),''समसामयिक भारत एवं शिक्षा'',जयपुर, अरिंहत शिक्षा प्रकाशन।
6. शर्मा,राकेश, (2017),''शिक्षा में दर्शन एवं प्रमुख शिक्षा शास्त्री'' स्वाति पब्लिकेशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 पेज न.154
7. शहरी बीपीएल सेन्सस,पत्रिका नगर पालिका डीडवाना,वर्ष–2011
8. सिंह, रामपाल व त्यागी ओ.एस. (2008), ''उदयीमानभारतीय समाज एवं शिक्षा'', आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

➢ **Report :-**

1. 1.Poverty and Equity (Data) India, The World Bank-2012.
2. BPL Report,C.Rangrajan committee,Former Governor Reserve Bank Of India16 Sep.2013
3. 3.National Education Policy-2016,Ministry of Human Resource Dovelopment, Govt.of India 2016.

➢ **लेख :–**

1. उपाध्याय,उषा,''लेखः''बीपीएल विद्यार्थियों की मानसिक समस्याएँ।''पृष्ठ संख्या.3
2. अप्रतिम,''विद्यार्थी एवं जीवन का कटू सत्य'': ब्लॉग, पृष्ठ संख्या.4

➢ **Website :-**

3. http:// bpl.wikipedia.com page no.1 19/01/2019